Research Review
The Refereed & Peer Review International Journal
www.researchreviewonline.com
ISSN : 2321- 4708
Oct. 2020, Year - 7 (90)
Paper ID : RRJ218440

गृह विज्ञान की शिक्षा के द्वारा नारी-सशक्तिकरण

डॉ. ज्योति कुमारी

शिक्षिका (गृह विज्ञान)

सारण एकेडमी +2 स्कूल, छपरा, सारण

सारांश

आधुनिक युग में नारी का विषय सार्वभौम रूची का हैा संपूर्ण विश्व में महिलाओं की स्थिति को सशक्त बनाने के लिए आंदोलन ने हमेशा नारी शिक्षा पर जोर दिया है, जो समाजिक परिवर्तन के लिए सबसे महत्वपूर्ण साधन है। नारी विकास के लिए शिक्षा में आत्म निर्भरता, व्यक्तिगत विकास, सामाजिक विकास उत्पादक क्षमता, सामाजिक एकीकरण और राजनीतिक समझ शामिल होनी चाहिए। ऊपर दी गई आवश्यकाताओं को प्राप्त करने के लिए गृह विज्ञान की शिक्षा सही साधन है। गृह विज्ञान की शिक्षा केवल बालिकाओं को शिक्षित एंव डिग्री प्राप्त करने के लिए विकसित नहीं की गई है जो वैवाहिक जीवन के लिए एक पासपोर्ट है बल्कि यह व्यक्तिगत, सामाजिक और आर्थिक रूप से सभी मामलों में पूर्ण विकास प्राप्त करने के लिए डिजाइन की गई है। गृह विज्ञान शिक्षा नारियों के व्यावसायिक कौशल, रोजगार और आय अर्जन के अवसरों, तकनीकी सेवाओं, महिला अधिकार, परिवार नियोजन ओर वैवाहिक जीवन के लिए योगदान देनेवाले कारकों पर पूर्ण और समान पहुँच और नियंत्रण प्रदान करती है। गृह विज्ञान शिक्षा ने नारी शक्ति को बाहरी दुनिया के कार्य क्षेत्र में भी प्रतिष्ठिता किया है। गृह विज्ञान शिक्षा ने यह साबित कर दिया है कि नारी गृहिणी होने के साथ-साथ एक शिक्षक, शोधकर्ता, उद्यमी और प्रशासक भी हो सकती है। इस प्रकार गृह विज्ञान शिक्षा जीवन के हर क्षेत्र में महिलाओं की क्षमता का उपयोग करता है और साबित करता है।

मुख्य शब्द :- सशक्तिकरण, महिला, गृह विज्ञान, शिक्षा, विकास

भारत ने अनादि काल से नारियों की गरिमा और महिमा को महत्व दिया है। इसने पुरूषों की अपेक्षा नारियों की श्रेष्ठता को स्वीकार करते हुए उसे एक शक्ति के रूप में प्रतिष्ठा प्रदान की है। भारत ने यह माना है कि जहाँ नारियों की पूजा होती है वहाँ देवताओं का वास होता है- ''यत्र नार्यस्तु पुज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता''।

जब हम हमारे विगत 5000 वर्षो के इतिहास का अध्ययन करते हैं तो हम हमारे समाज में स्त्रियों के स्तर को लेकर अनेक बदलती हुई स्थितियों का अवलोकन करते है। प्रारम्भिक वेदिक काल में पूर्ण समानता थी। इसके बाद सामन्ती युग आया, विदेशी आक्रमण आए, स्त्रियों की स्वतंत्रता सिकुड़ गई। लेकिन अब वह सब समाप्त हो चुका है, वह सब कल था। जब हमने आधुनिक युग में प्रवेश किया तो एक नई परिस्थिति

Publishing URL: : http://www.researchreviewonline.com/issues/volume-7-issue-90-october-2020/RRJ218440

ISSN : 2321- 4708
Oct. 2020, Year - 7 (90)
Paper ID : RRJ218440

सामने आई; और इस नई परिस्थिति की ओर हमारे आधुनिक महान नेताओं ने हमारा ध्यान-दोनों स्त्री व पुरूषों का ध्यान आकर्षित किया, और हमसे इस महान आधुनिक स्थिति का लाभ उठाने का आह्वान किया जिससे कि साथ-साथ काम करते हुए स्त्री व पुरूष आत्मविकास और आत्माभिव्यक्ति के उच्चतम शिखर तक पहुँच सकें।

आधुनिक भारत के उन नायकों में जो स्त्री व पुरूष की पूर्ण समानता के पक्षधर थे, स्वामी विवेकानन्द सर्वश्रेष्ठ है। उन्होंने स्पष्ट शब्दों में कहा है कि केवल पुरूषों को शिक्षा व अवसर प्रदान करने और स्त्रियों की उपेक्षा करने से कोई भी समाज प्रगति नहीं कर सकता है। भारतीय समाज पर उस प्रतिबन्धित विकास की छाया है क्योंकि यहाँ की स्त्रियों की सदियों तक उपेक्षा होती रही, उन्हें शिक्षा और विकास के लिये कोई आर्थिक व सामाजिक अवसर नहीं दिये गये। इसीलिये स्वामीजी ने उदाहरण देते हुए कहा था कि कोई भी पक्षी एक पंख के सहारे नहीं उड़ सकता, इसे दोनों पंखों की आवश्यकता है। अत: भारतीय समाज को गतिशील बनाने के लिये हमें स्त्रियों को उसी प्रकार की शिक्षा देनी चाहिये जैसी कि पुरूषों को। आधुनिक भारत में यह एक प्रमुख विचार है। जब स्वतन्त्रता प्राप्ति के लिये राजनीतिक आन्दोलन हुआ तब स्त्रियाँ स्वतन्त्रतापूर्वक इसमें पुरूषों की बराबर की साथी बनी थी। इस सन्दर्भ में राजनीतिक क्षेत्र में गाँधीजी का कार्य विशेष महत्व का है। हमने अपने इतिहास के आधुनिक युग का इसी प्रकार प्रारम्भ किया था। इसलिये वह राजनीतिक स्वतन्त्रता जो हमने प्राप्त की उसमें मानवीय विकास के इन शैक्षणिक और आर्थिक अवसरों को सदियों से उपेक्षित करोड़ों स्त्री व पुरूषों के विकास की केवल प्रस्तावना और साधन के रूप में लिया। अभी हम सामन्तवादी व्यवस्था से आधुनिक युग में आने के लिये एक क्रान्तिकारी आन्दोलन में लगे हुए है। केवल विस्तृत शिक्षा और आर्थिक विकास के पर्याप्त अवसर देकर स्त्री व पुरूषों का उत्थान करके ही हम भारत को, इसके लम्बे इतिहास में पूरी तरह आधुनिक युग में ला सकते हैं।

भारत में नारी परिवार की रीढ़ होती है। वह न केवल घरेलू कार्यों का सम्पादन करती है बल्कि अपनी सभ्यता, संस्कृति को संरक्षित करने, सँवारने और उनकी नियति को एक स्परूप प्रदान करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करती है। यद्यपि महिलाएँ हमारी कुल आबादी का केवल 50 प्रतिशत हैं तथापि वे हमारे समाज के विकास में 75 प्रतिशत योगदान करती हैं जबकि पुरूष केवल 25 प्रतिशत का योगदान करते है। यद्यपि समाज के विकास में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका रही है जिसकी पूर्ति पुरूष या यंत्र नहीं कर सकते तथापि वे सदियों से उपेक्षिता रही हैं। फलत: आज महिलाएँ सामाजिक और आर्थिक अपर्याप्तता, अभाव और अपमान के कारण समाज में सर्वाधिक पीडित एवं उपेक्षित हैं। नारियों का पिछडापन उन्हें दरिद्रता और अधिकारहीनता प्रदान करता है। जिसके फलस्वरूप नारियाँ प्राकृति आपदा एवं आर्थिक तंगी के समय सार्वाधिक पीडित होती है। भारत में विश्व की एक तिहाई से अधिक लोग गरीब हैं जिसका मुख्य कारण नारियों की शक्ति एवं सामर्थय का अभाव है।

Publishing URL: : http://www.researchreviewonline.com/issues/volume-7-issue-90-october-2020/RRJ218440

ISSN : 2321- 4708
Oct. 2020, Year - 7 (90)
Paper ID : RRJ218440

सशक्तिकरण एक सक्रिय, बहुआयामी प्रक्रिया है जो नारियों को उनकी शक्ति का एहसास कराती है। यह उन्हें ज्ञान एवं संसाधनों तक पहुँच, निर्णय लेने में स्वायतता तथा अपने जीवन के संवर्धन के लिए निर्णय लेने की क्षमता प्रदान करती है। साथ ही नारी सशक्तिकरण नारियों को उनपर समाज के द्वारा थोपी गई प्रथाओं, विश्वासों एवं रूढियों से मुक्ति प्रदान करता है। संपूर्ण विश्व में गृह विज्ञान की शिक्षा एवं नारी-मुक्ति आन्दोलनों ने सदैव इस बात पर बल दिया है कि सामाजिक परिवर्तन के लिए नारियों की शिक्षा सर्वाधिक महत्वपूर्ण साधन है। नारियों को धर्म, विज्ञान, कला एवं गृहकार्य आदि सभी विषयों का ज्ञान होना चाहिए। उन्हें केवल गृह कार्य एवं पूजा पद्धति सिखलाने से काम नहीं चलेगा। प्रत्येक विषय का ज्ञान देना उचित होगा। छात्राओं के सामने आदर्श नारी-चरित्र रखकर उनमें त्याग और अनुराग उत्पन्न करना होगा। सीता, सावित्री, दम्यन्ति, लीलावती, मीराबाई आदि के जीवन चरित्र को समझाकर उन्हें अपने जीवन को इसी प्रकार निर्मित करने का उपदेश देना होगा। नारी शिक्षा के महान समर्थक स्वामी विवेकानन्द के अनुसार :

> "हम चाहते हैं कि भारत की स्त्रियों को ऐसी शिक्षा दी जाय, जिससे वे निर्भय होकर भारत के प्रति अपने कर्तव्य को भलीभाँति निभा सकें और संघमित्रा, लीला, अहिल्याबाई और मीराबाई आदि भारत की महान देवियों द्वारा चलायी गयी परंपरा को आगे बढ़ा सकें एवं वीरप्रसू बन सकें। भारती की स्त्रियाँ पवित्रता एवं त्याग की मूर्ति हैं, क्योंकि उनके पास वह बल बौर शक्ति है, जो सर्वशक्तिमान परमात्मा के चरणों में सम्पूर्ण आत्मसमर्पण से प्राप्त होती है।"

नारी विकास के लिए शिक्षा में शैक्षिक आत्मनिर्भरता, सामाजिक विकास, व्यक्तित्व विकास, सामाजिक एकीकरण और राजनीतिक समझ आदि शामिल होना चाहिए। गृह विज्ञान की शिक्षा इन सभी आवश्यकताओं को प्राप्त करने के लिए एक सही माध्यम है। गृह विज्ञान की शिक्षा लड़कियों को केवल शिक्षित एवं डिग्री प्राप्त करने के लिए विकसित नहीं की गई है बल्कि यह उन्हें व्यक्तिगत, सामाजिक और आर्थिक रूप से पूर्ण विकास प्राप्त करने के लिए तैयार की गई है। गृह विज्ञान की शिक्षा के द्वारा महिलाओं को निम्नलिखित रूपों से सशक्त बनाया जा सकता है:-

1. **आर्थिक :-** गृह विज्ञान की शिक्षा ही एकमात्र साधन है जो महिलाओं को उनके जीवन के दो प्रमुख लक्ष्य (क) घर और परिवार की देखभाल करना तथा (ख) एक उज्जवल आजीविका की प्राप्ति के लिए प्रशिक्षित करता है। गृह विज्ञान शिक्षा महिलाओं को रोजगार एवं स्वरोजगार दोनों के लिए एक व्यापक स्त्रोत प्रदान करती है।

इस प्रकार गृह विज्ञान शिक्षा महिलाओं को आर्थिक रूप से समृद्ध करने के साथ-साथ उन्हें स्वतंत्र एवं आत्मनिर्भर भी बना सकती है। इससे उनका आत्म विश्वास बढ़ेगा और वे समाज के बीच अपनी एक विशिष्ट पहचान बना पाएँगी। इससे उनके जीवन की गुणवता एवं पारिवारिक जीवन स्तर में भी सुधार होगा।

2. **सामाजिक :-** गृह विज्ञान शिक्षा के द्वारा महिलाओं के खिलाफ होने वाली हिंसा के सभी प्रकार चाहे वह शारीरिक हो या मानसिक, घरेलू हो या सामाजिक को समाप्त किया जा सकता है। यह महिला सुरक्षा, घरेलू हिंसा, यौन उत्पीड़न आदि से संबंधित विभिन्न अधिकारों और नियमों के बारे में महिलाओं को जागरूक बनाता है। उदाहरण के लिए घरेलू हिंसा अधिनियम 2005; दहेज निषेध अधिनियम 1961; हिन्दू विवाह

Publishing URL: : http://www.researchreviewonline.com/issues/volume-7-issue-90-october-2020/RRJ218440

ISSN : 2321- 4708
Oct. 2020, Year - 7 (90)
Paper ID : RRJ218440

अधिनियम 1986; बाल विवाह निरोधक अधिनियम 1929 आदि के द्वारा महिलाओं का संरक्षण। गृह विज्ञान शिक्षा महिलाओं के खिलाफ होने वाली भेदभाव को समाप्त कर स्त्री और पुरूष दोनों का समाज में समान अधिकार है को मान्यता प्रदान करती है। गृह वैज्ञानिकों ने कभी भी कानून में भेदभाव या महिलाओं के खिलाफ व्यवहार की अनुमति नहीं दी। एक महिला स्वास्थ्य देखभाल, सभी स्तरों पर गुण्वत्तापूर्ण शिक्षा, व्यावसायिक मार्गदर्शन, सामाजिक सुरक्षा आदि के संबंध में समान अधिकारों का उपयोग कर सकती है। गृह विज्ञान की शिक्षा के द्वारा बालिकाओं के अधिकारों का उल्लंघन एवं उनके खिलाफ भेदभाव को भी समाप्त किया जा सकता है। गृह विज्ञान शिक्षा के द्वारा प्रसवपूर्व लिंग परीक्षण, भ्रुण हत्या, बाल विवाह जैसी कुरीतियों को रोका जा सकता है। इस प्रकार महिलाओं का सामाजिक सशक्तिकरण हो पाएगा।

3. **व्यक्तिगत :-** गृह विज्ञान जीवन के हर पहलू जैसे स्वास् थ्य, पोषण, भोजन, शरीर क्रिया विज्ञान, समय प्रबंधन, धन प्रबंधन, परिवार नियोजन, बाल पालन, वस्त्र, उद्यमिता, संचार आदि का ज्ञान प्रदान करती है। एक गृह वैज्ञानिक महिला को जीवन के हर पहलू का ज्ञान होता है और यह ज्ञान उसे अपने व्यक्तिगत, पारिवारिक और अन्य सामाजिक मामलों में स्वतंत्र रूप से निर्णय लेने में सक्षम बनाता है। गृह विज्ञान शिक्षा महिलाओं और लड़कियों को शिक्षा के लिए समान पहुँच सुनिश्चित करती है। गृह विज्ञान शिक्षा महिलाओं के स्वास्थ्य के लिए समग्र दृष्टिकोण प्रदान करती है। यह ज्ञान उनके स्वयं के साथ-साथ उनके परिवार की पोषण स्थिति और पोषण संबंधी रूग्नता तथा मृत्यु दर को भी कम कर सकता है।
4. **राजनीतिक :-** गृह विज्ञान शिक्षा न केवल परिवार में महिलाओं की स्थिति को पहचानने में बल्कि लोगों के आर्थिक और सामाजिक विकास में भी योगदान देती है। गृह विज्ञान शिक्षा महिलाओं को सामुदायिक विकास में एक प्रमुख भूमिका निभाने की उनकी क्षमता का बोध कराती है। कई गृह वैज्ञानिक महिलाएँ ग्राम सभाओं में भाग ले रही हैं और समुदाय के विकास के लिए काम कर रही है। आजकल महिलाओं के नेतृत्व क्षमता को समाज के द्वारा भी मान्यता दी गई है।

गृह विज्ञान शिक्षा नारियों के समग्र सशक्तिकरण विशेष रूप से स्वास्थ्य, शिक्षा, सूचना, आत्म विकास, व्यावसायिक कौशल, रोजगार और आय अर्जन के अवसरों, वैवाहिक जीवन के लिए योगदान देने वाले कारकों पर पूर्ण और समान पहुँच तथा नियंत्रण प्रदान करती है। गृह विज्ञान शिक्षा ने नारी शक्ति को बाहरी दुनिया के कार्यक्षेत्र में भी स्थापित किया है। गृह विज्ञान की शिक्षा ने यह साबित कर दिया है कि महिलाएँ गृह निर्माता होने के साथ-साथ एक शिक्षक, शोधकर्ता, उद्यमी और प्रशासक भी हो सकती है। इस प्रकार यह जीवन के हर क्षेत्र में महिलाओं की उपयोगिता और सार्थकता को साबित करती है।

संदर्भ :-

1. मनुस्मृति, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली
2. विवेकानन्द, स्वामी : ‘‘भारतीय नारी’’, रामकृष्ण मठ, नागपुर, पृष्ठ संख्या- 10
3. Chandra A., Shah A and Joshi U. , “Fundamentals of Teaching Home Science”, sterling publishers pvt. Ltd., New Delhi.